Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

नालको NALCO

जनवरी–मार्च 2022

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Lina Mohapatra
Swayamprava Rath
Roshan Pandey

Co-ordinator
Amrita Basu

Design concept
Aswini Sutar

जनवरी-मार्च 2022

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

ସମ୍ପାଦକୀୟ

ସ୍ୱାଧୀନତାର ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ହେଉଛି ଭାରତର ଏକ ବିରଳ ଉପଲବ୍ଧି। ଆମେ ଉନ୍ମୁକ୍ତ ଚକ୍ଷୁରେ ଦେଖିଥିବା ସ୍ୱପ୍ନଗୁଡ଼ିକୁ ଆକାର ଦେବାର ମହାନ ଅବସର ମିଳିଛି ଏହି ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବରେ। ଆମ ଜୀବନ ମୂଲ୍ୟଗୁଡ଼ିକ ସୁରକ୍ଷିତ ରଖି ନୂତନ ଭାରତ ନିର୍ମାଣ ପାଇଁ ଉଦ୍ୟମ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଛି। ଏବେ 'ସ୍ୱତନ୍ତ୍ରତା ଚେତନା'ର ଭାବ ଦେଶ ବାସୀଙ୍କ ଭିତରେ ଦେଖା ଗଲାଣି। ସ୍ୱତନ୍ତ୍ରତା ଚେତନା ଯେତିକି ପରିବ୍ୟାପ୍ତ ହେବ ଲୋକେ କଷ୍ଟଲବ୍ଧ ସ୍ୱାଧୀନତାର ସୁରକ୍ଷା ପାଇଁ ସେତେ ତତ୍ପର ହେବେ। ସ୍ୱାଧୀନତା ଆନ୍ଦୋଳନ ସମୟର ଅନେକ ପିଢ଼ି ଗଲେଣି। ପରାଧୀନ ଭାରତରେ ଭାରତୀୟମାନେ କିଭଳି ଜୀବନ ଯାପନ କରୁଥିଲେ ଏବର ପିଢ଼ି ତା'ର କଳ୍ପନା ମଧ୍ୟ କରି ପାରିବେ ନାହିଁ। ତାହା ଏଭଳି ଏକ ପଢ଼ି ଥିଲା ଯେଉଁମାନେ ସ୍ୱାଧୀନତା ହାସଲ କରିବା ପାଇଁ ସଂଘର୍ଷଶୀଳ ସମୟକୁ ଦେଖିଥିଲେ ଏବଂ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ଯାତନା ଭୋଗ କରିଥିଲେ। ପରନ୍ତୁ ବର୍ତ୍ତମାନର ପିଢ଼ି ଏହାକୁ ନିଜ କଳ୍ପନା ମଧ୍ୟରେ ଚିନ୍ତା କରିପାରୁ ନାହାନ୍ତି। ଏହି ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବର ଲକ୍ଷ୍ୟ ହେଲା, ବର୍ତ୍ତମାନର ପିଢ଼ି ମଧ୍ୟରେ ସେହି ସ୍ୱପ୍ନ, ଆଦର୍ଶ, ଆଶା ଏବଂ ଆକାଂକ୍ଷାର ସ୍ମୃତି ଜାଗରଣ କରିବା। ଆର୍ଥିକ ଓ ସାମାଜିକ ଅସମାନତାର ଭେଦ ଭାବକୁ ମିଟାଇ ସମୃଦ୍ଧ ଓ ସୁଖୀ ଭାରତର ନିର୍ମାଣ କରିବା ଏବଂ ଏହି ମିଶନରେ ଶୀଘ୍ର ସଂଯୁକ୍ତ ହେବା ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଏହି ସ୍ୱାଧୀନତାର ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ପାଳିତ ହେଉଛି।

ଗର୍ବ କଲାଭଳି ଭାରତ ପାଖରେ ଅନେକ କିଛି ଅଛି। ଅତୀତକୁ ସିଂହାବଲୋକନ କରି ଅଗ୍ରସର ହେବା ବୁଦ୍ଧିମାନର ଲକ୍ଷଣ। ଆମର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସ ଏବଂ ଚେତନା ସାଂସ୍କୃତିକ ବିଭବ ଉଚ୍ଚକୁ ଉଡ଼ିବା ପାଇଁ ଡେଣା ରୂପେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବ। ଲୋକତାନ୍ତ୍ରିକ ବ୍ୟବସ୍ଥା, ସମ୍ବିଧାନ ପ୍ରଦତ୍ତ ନୀତି ନିୟମ ଓ ଅଧିକାର ଦ୍ୱାରା ଆମେ ଅର୍ଥାତ୍ ଦେଶର ପ୍ରତ୍ୟେକ ନାଗରିକଙ୍କୁ ଦୁରାଗ୍ରହ, ଅନ୍ଧବିଶ୍ୱାସ, ସଂକୁଚିତ ବିଚାରରୁ ମୁକ୍ତ ହୋଇ ଏକ ମହିମାମଣ୍ଡିତ, ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ମହିମା, ବିଦ୍ୱାନପୂର୍ଣ୍ଣ, ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଅର୍ଥିକ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଓ ସୁସ୍ଥ ପ୍ରଶାସନିକ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଦ୍ୱାରା ଏକ ନୂତନ ଭାରତ ନିର୍ମାଣ କରିବା ପାଇଁ ଅନ୍ତଃପ୍ରେରଣା ଯୋଗାଇବ ଏହି ସ୍ୱାଧୀନତାର ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ। ଏଠାରେ ବେଦର ଶ୍ଲୋକଟିଏ ସ୍ମରଣ କରିବା।

'ଓଂ ସ୍ୱଗଚ୍ଛଧ୍ୱଂ ସଂବଦଧ୍ୱଂ ସଂ ବୋ ମନାଂସି ଜାନତାମ୍'

ଅର୍ଥାତ ଆମେ ସବୁ ଏକା ସଂଗରେ ଚାଲିବା ଏବଂ ପରସ୍ପର କଥାବାର୍ତ୍ତା ହେବା ଦ୍ୱାରା ଆମର ମନ ଏକ ହେବ।

ସସ୍ମିତା ପାତ୍ର

संपादकीय

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव भारत की एक विशेष उपलब्धि है। इस स्वरूप में हमें खुले आँख से देखे हुए सपनों को आकार देने का एक महान अवसर प्राप्त हुआ है। अपने जीवन के मूल्य को सुरक्षित रखते हुए नए भारत के निर्माण का प्रयास आरंभ हो गया है। अब स्वतंत्रता की चेतना का भाव देशवासियों में और भी देखा जा सकता है। स्वतंत्रता की चेतना का जितना अधिक विकास होगा, लोगों में मुश्किल से मिली इस स्वाधीनता की रक्षा के लिए तत्परता बढ़ेगी। स्वाधीनता आंदोलन के समय की कई पीढ़ियाँ गुजर चुकी हैं। पराधीन भारत में भारतीय जैसे जीवन यापन कर रहे थे, आज की पीढ़ी उसकी कल्पना मात्र भी नहीं कर सकती। वह ऐसी एक पीढ़ी थी, जिसने स्वाधीनता हासिल करने के लिए संघर्षशील समय को देखा था एवं विभिन्न प्रकार के यातनाओं को सहा था। परंतु वर्तमान पीढ़ी अपनी कल्पना में इसका विचार भी नहीं कर सकती है। इस अमृत महोत्सव का लक्ष्य है- वर्तमान पीढ़ी में उस सपने, आदर्श, आशा एवं आकांक्षा की याद को फिर से जगाना, आर्थिक, सामाजिक असमानता के भेद-भाव को मिटा कर समृद्ध और सुखी भारत का निर्माण करना और इस मिशन के लिए शीघ्रता से एकजुट होना।

इस उद्देश्य से ही स्वाधीनता का यह अमृत महोत्सव हम मना रहे हैं। भारत के पास गर्व करने के लिए बहुत कुछ है। अतीत को एक बार मुड़कर देखते हुए आगे बढ़ना बुद्धिमानी का लक्षण है। हमारा समृद्ध इतिहास एवं चेतना, सांस्कृतिक वैभव ऊँचा उड़ने के लिए हमारे पंख का काम करेंगे। लोकतांत्रित व्यवस्था, संविधान द्वारा निर्धारित नीति- नियम एवं अधिकार द्वारा हममें अर्थात प्रत्येक नागरिकों में दुराग्रह, अंधविश्वास और संकुचित विचार से मुक्त होकर एक महिमा-मंडित, आध्यात्मिक, विद्वत, स्वतंत्र आर्थिक व्यवस्था व स्वस्थ्य प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा एक नए भारत का निर्माण करने के लिए इस अमृत-महोत्सव से अंतः प्रेरणा का संचार होगा। वेद की यह पंक्ति इस परिदृश्य में सर्वथा उद्धृत की जा सकती है-

" ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्"

हम सब एक साथ चलेंगे एवं परस्पर बात-चीत द्वारा हमारा मन एक होगा।

सस्मिता पात्रा

लाई है हजारों रंग...

अपने मूल रूप में प्रकृति अनेक रंगों की जननी और रसभरी है। हजारों रंगों का प्रतीक यह त्योहार प्रत्येक वर्ष फाल्गुन में मनाया जाता है। इस कारण इसे फाल्गुनी भी कहा जाता है। उज्ज्वल वसंती वातावरण और चारों तरफ शीतल-मंद-सुगंध से पूरित पवन की अठखेलियों के कारण रंगीनियाँ और भी बढ़ जाती हैं। प्रकृति का रंगीन वातावरण नई उमंगें और नई तरंगें लेकर आता है। यह मस्ती, अठखेलियाँ और जोश होली का त्योहार बनकर रंग गुलाल उड़ाने लगता है। हर वर्ष होली की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता से की जाती है। हर गली, हर गाँव और हर शहर में कई दिन पहले से ही होली खेलने की तैयारियाँ आरंभ हो जाती हैं। ढोलक, झाँल, करताल व मंजीरों के संगीत में मस्त गली-गली में घूमती टोलियाँ फाग और होली के गीत गाती मस्ती में खो जाती हैं। होली का त्योहार दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन घर-घर घूमकर लकड़ियाँ इकट्ठी की जाती हैं। फिर पूर्णिमा की रात्रि में होलिका-दहन पूरी हर्ष उल्लास से मंत्र-पाठ के साथ होता है। उसके साथ ही अनेक प्रकार के लोक गीतों की धुनों से सारा वातावरण मुखरित होने लगता है। मन उन धुनों पर नाच उठता है। होली का दूसरा दिन होता है धुलेंडी। भोर होते ही एक ओर सूर्य प्रकाश में रंग बिखेर देता है। दूसरी ओर धरती पर रंगों की धूम मच जाती है। बच्चे, बूढ़े, युवक और युवतियों में एक-दूसरे पर रंग डालने की होड़-सी लग जाती है। रंगों की पिचकारियां खुशी के फव्वारे छोड़ने लगती हैं। हुड़दंग जीवन में एक नया रंग भर देता है। होली ही वह त्योहार है जिसमें अमीर गरीब का भेदभाव नहीं रहता। इस दृष्टि से इसे मानवीय उमंगों का त्योहार कहा जा सकता है।

होली का केवल यही एक पक्ष नहीं। उसका एक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक रूप भी है। कहते हैं कि इस पर्व का संबंध भक्त प्रह्लाद से भी है। वह हिरण्यकश्यप का पुत्र

था। पिता कट्टर नास्तिक था तो पुत्र कट्टर आस्तिक। हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को दंड देने का आदेश दिया। प्रह्लाद की बुआ होलिका को यह वर प्राप्त था कि अग्नि उसे जला नहीं सकती। अतः वह प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में प्रविष्ट हो गयी। परंतु भगवान के आशीर्वाद से प्रह्लाद का बाल भी बांका न हुआ, उसकी जगह होलिका जल गई। इस कथा के अनुसार होलिका के नाम पर होलिका दहन की परंपरा आज भी चली आ रही है। इसी पौराणिक कथन के अनुसार आज भी होलिका जलाते हैं और विजय को मनाने के लिए रंग खेलते हैं। इस प्रकार होली केवल एक त्योहार नहीं, अपितु अनेक घटनाओं और उनके साथ जुड़े विश्वासों का साकार रंगीन रूप भी है। इसीलिए इस दिन लोग अपने बैर-भाव भुलाकर एक-दूसरे के गले मिलते हैं।

होली भेदभाव दूर कर आपस में प्रेम और भाईचारे का संदेश देती है। साथ ही वह यह भी बताती है कि सत्य और ईश्वर-भक्ति की सदा जीत होती है। यह हंसी-खुशी, आनंद मस्ती का त्योहार है। इसे मनाने के बाद हममें नई स्फूर्ति और शक्ति पैदा होती है।

अमृता बसु
भुवनेश्वर

होली

होली भारत के सबसे लोकप्रिय त्योहार में से एक है। यह हिंदुओं का एक पवित्र त्योहार माना जाता है। यह विभिन्न रंगों से भरा त्यौहार है। इस पर्व का नाम लेते ही छोटे-बड़े सभी का मन उमंग से भर उठता है। हर वर्ग के लोग, बड़े-बूढ़े, बच्चे जवान सब एकजुट होकर, गले मिलते हुए इस त्यौहार को मनाते हैं। हर एक की जुबान पर एक ही गीत होता है,

होली आई रे, आई रे होली।
आओ मिलकर सब खेले रे होली।
लाल, पीला, नीला, हरा रंग, साथ लेकर आई होली।
गली-गली में खूब खेलें, आओ भैया होली।
गिले- शिकवे मिटाते हुए मनाएं प्यार से होली।

यह माना जाता है कि होली यानी बुराई पर अच्छाई की जीत। होली के पीछे भी एक पौराणिक कथा है। भक्त प्रह्लाद जो भगवान विष्णु के परम भक्त थे, वहीं उनके पिता राक्षस हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु के परम विरोधी थे। लाख कोशिश के बाद भी जब वे अपने बेटे प्रह्लाद को जान से मार न सकें, तब उन्होंने अपनी बहन होलिका से मदद मांगी। उनकी बहन होलिका, प्रह्लाद को जान से मारने के लिए आग में लेकर कूद पड़ती है। फलस्वरूप होलिका जलकर भस्म हो जाती है जबकि होलिका को आग में न जलने का वरदान मिला था और भक्त प्रह्लाद हँसते-हँसते आग से सुरक्षित बाहर निकल आते हैं।

होली, फाल्गुन मास, मार्च के महीने, पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। यह मास ठंड के विदाई का भी संदेश देता है । फाग लोकगीत भी काफी मशहूर है जैसै कि "फाग खेलने आए नन्द किशोर।" ढोलक, हारमोनियम से रसीले फाग गायन करते हैं और लोगों का दिल जीत लेते हैं। इस अवसर पर हास्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया जाता है। होली के दिन सब लोग नए कपड़े पहनकर होली खेलने और साथ में होली की शुभकामनाएं देने एक-दूसरे के घर भी जाते हैं। घर-घर में तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवान भी बनते हैं।

पूरे देश में मथुरा और ब्रज की होली काफी मशहूर है। वहाँ की होली जैसे पूरे भारत में देखने को नहीं मिलती है। कृष्ण मंदिर में होली की धूम का अलग ही रूप होता है। ब्रज के लोग राधा के गाँव होली खेलते हैं। मंदिर कृष्ण भक्तों से भरा पड़ा रहता है। चारों तरफ गुलाल लहराता रहता है। कृष्ण व राधा की जय-जयकार करते हुए होली का आनंद लेते हैं। दूर-दूर से लोग आ आकर ब्रज की होली का मजा लेते हैं।

पुरुष रंग भरी पिचकारी लेकर महिलाओं को भिगोने की कोशिश में रहते हैं और महिलाएं खुद को रंगों से बचाते हुए इसका उत्तर लाठियों से देती हैं। होली के अवसर पर भांग आदि का भी जमकर प्रयोग किया जाता है। साथ ही साथ कुछ लोग कृत्रिम रंगों एवं वस्तुओं का भी प्रयोग करते हैं जो त्वचा और आंखों को भी हानि पहुँचाता है। कई जगह पर तो कीचड़ और गोबर से भी होली खेली जाती है। इन सबसे बचने के लिए पहले फूलों से रंग तैयार किया जाता था। इसी प्रचीन प्रथा को पुनर्जीवत करना हमारी जिम्मेदारी बनती है।

होली का त्यौहार आया।
एक-दूसरे को रंग में रंगने आया।
रंगों की सौगात लाया।
सबके मन को लुभाया।
दुश्मनों ने भी हाथ मिलाया।
अपनों ने भी हाथ बढ़ाया।
रंग गुलाल लेकर निकले सब।
होली में घुल-मिल गए सब।
हमें अपनों से प्यार है।
यह सबका त्योहार है।

यह त्योहार हमारे परिवार के लिए बहुत ही महत्व रखता है। इसी दिन हमारी प्यारी बेटी ने हमारे घर में जन्म लिया जिसका नाम हमने प्यार से रखा होलिनी पल्लवी पटनायक है।

अनुराधा पटनायक
दामनजोड़ी

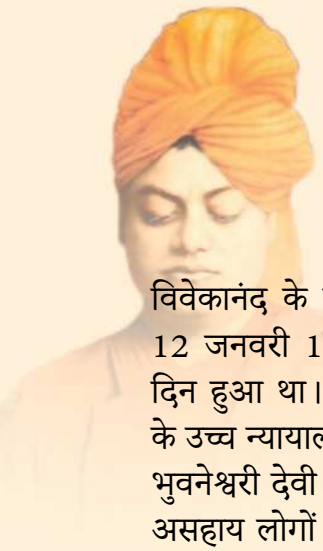

विवेकानंद की अनसुनी कहानियाँ

विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्र था। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में मकर संक्रांति के दिन हुआ था। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के उच्च न्यायालय में अधिवक्ता थे। उनकी माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों की महिला थी। वे गरीब असहाय लोगों की मदद करने में सदा तत्पर रहती थीं। नरेंद्र के जीवन पर अपनी माता का काफी प्रभाव पड़ा। नरेंद्र एक काफी चंचल बालक थे और उनको पालने के लिए दो नौकरानियों की आवश्यकता होती थी। वे सात भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। वे अपनी माता से पौराणिक कथाएं सुनकर बड़े हुए थे जिसके कारण उन्हें हिन्दू देवी-देवताओं से काफी गहरा लगाव था। वे अपनी माँ के कारण बहुत बड़े शिवभक्त थे। बचपन में उनका पूजा-पाठ और ध्यान में बहुत ही मन लगता था। उन्हें बचपन से ही सन्यासियों से गहरा लगाव था जब भी वे सन्यासी को देखते थे जो भी उनके हाथ में रहता था उन्हें दे देते थे। जिस कारण जब भी कोई सन्यासी दिखाई पड़ता तो नरेंद्र को एक कमरे में बंद कर दिया जाता।

छह वर्ष की आयु में उन्हें प्राथमिक विद्यालय में अध्ययन के लिए भेजा गया परंतु जब वे अपने दोस्तों से कुछ अपशब्द सीखकर आए तो उनके माता-पिता ने उन्हें विद्यालय जाने से मना कर दिया और उनके लिए एक अलग शिक्षक की व्यवस्था कर दी। नरेंद्र बचपन में काफी तीव्र स्मरण शक्ति के थे और संस्कृत, व्याकरण, रामायण व महाभारत के बड़े-बड़े अंश आसानी से कंठस्थ कर लेते थे। बचपन में वे मित्रों के काफी प्रिय भी रहे और आजीवन भर उनसे मित्रता भी कायम रही। राजदरबार का खेल उन्हें बड़ा प्रिय लगता था और उन्हें हमेशा राजा का अभिनय दिया जाता था। उनके अन्य मित्र मंत्री, सेनापति तथा अन्य राज्य अधिकारी बनते थे।

नरेंद्र छोटी-सी आयु में ही बहुत बड़े-बड़े प्रश्न करते थे जैसे छुआछूत क्यों है? उनके पिता के कार्यालय में हिन्दू रीति के अनुसार अलग जाति के लिए अलग बर्तन रहते थे। उन बर्तनों का निरीक्षण कर कहते थे कि इन दोनों बर्तनों में मुझे कोई अंतर नहीं दिख पड़ता है। उनके माता-पिता नरेंद्र के परवरिश पर काफी ध्यान देते और उन पर हमेशा दृष्टि बनाए रखते थे। एक बार नरेंद्र अपनी माँ से नाराज होकर कठोर अपशब्द कह दिए जिसकी शिकायत उनके पिता के पास पहुँची तो उनके पिता ने नरेंद्र को डाँटने के बदले उनके द्वार पर कोयले से लिख दिया नरेंद्र ने आज अपनी माता को ये शब्द कहे और पूरा विवरण दीवार पर कर दिया ताकि नरेंद्र के दोस्त यह जान सके कि नरेंद्र ने अपनी माता के साथ कितना अनुचित व्यवहार किया। जिससे नरेंद्र को अपनी अनुचित कार्य पर शर्मिंदगी महसूस हो।

नरेंद्र को भी अपने माता-पिता से धर्म और संस्कार के गुण प्राप्त हुए। एक बार नरेंद्र ने अपने पिता से पूछा "पिताजी मुझे संसार में किस तरह रहना चाहिए?"

पिताजी का उत्तर था "कभी भी किसी बात पर विस्मित न होना"

यह बहुमूल्य परामर्श नरेंद्र के जीवन में काफी उपयोगी सिद्ध हुआ। इस सुझाव के कारण वे राजाओं के महल और भिखारियों की झोपड़ी में अपने मन का संतुलन बनाए रख पाने में सक्षम हो सके थे। एक बार नरेंद्र ने घर लौटकर अपनी माता से कहा कि विद्यालय में उनके साथ गलत व्यवहार हुआ है तो उनकी माता ने नरेंद्र से कहा बेटा "अगर तुमने सत्य का साथ दिया है तो फिर क्या चिंता? फल की तरफ मत ध्यान दे और सत्य का हमेशा पालन करता रह। चाहे सत्य के मार्ग पर कितना भी कष्ट सहना पड़े।" वर्षों बाद नरेंद्र ने स्वाभिमान पूर्वक अपने श्रोताओं को बताया था कि अपने ज्ञान के विकास के लिए मैं अपनी माँ का ऋणी हूँ।

इसी तरह माता-पिता के परवरिश का बच्चे पर काफी प्रभाव पड़ता है। एक बार विवेकानंद किसी सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए गए थे तब एक महिला ने उनसे यह पूछा था कि आपकी पढ़ाई किस स्कूल से हुई है और मैं अपने बच्चे को उसी स्कूल से दीक्षित करना चाहती हूँ, तब विवेकानंद ने कहा कि अभी वह स्कूल विद्यमान नहीं है। तब महिला ने कहा ऐसा कैसे हो सकता है? शायद आप मुझे बताना नहीं चाहते तो इस पर विवेकानंद मुस्कुराते

हुए बोले कि मेरी माता अब इस दुनिया में नहीं हैं। इस पर सभी स्तब्ध रह गए। विवेकानंद हमेशा अपनी माता को ही प्रथम गुरु मानते थे। स्वामी जी अपने शिष्यों के समक्ष प्रायः अपनी माता जी की अद्भुत संयम शक्ति का वर्णन किया करते थे। स्वामी जी बताते थे कि उनकी माँ का चरित्र ही उनके जीवन और कर्म का सतत प्रेरणा स्रोत रहा है। जिन्होंने उन्हें उच्च संस्कार दिए थे।

जब विवेकानंद अमेरिका गए थे तो एक विदेशी महिला ने उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा तब विवेकानंद ने पूछा आप मुझसे विवाह क्यों करना चाहती हैं? उस विदेशी महिला ने उत्तर दिया कि मैं आपके जैसा ही पुत्र चाहती हूँ इसलिए मैं आपसे विवाह करके आपके जैसा पुत्र पैदा करना चाहती हूँ। तब विवेकानंद ने मुस्कुराकर जवाब दिया कि आप मुझे अपना पुत्र ही मान सकती हैं। इस उत्तर को सुनते ही महिला उनसे बहुत प्रभावित हुई और थोड़ी लज्जित भी हुई। विवेकानंद हमेशा महिलाओं की काफी इज्जत करते थे इसका प्रमाण इस घटना से मिलता है।

विवेकानंद की जीवनी से हमें बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। आज के आधुनिक युग में जब सभी व्यक्ति अपने हितों का ध्यान रखकर ही हर कार्य करते हैं तब विवेकानंद की कही गई बातें हमारा मार्गदर्शन करती हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्र और राष्ट्र के लोगों के लिए समर्पित किया। वे रामकृष्ण मिशन से जुड़ें और श्री रामकृष्ण के विचारों को पूरी दुनिया तक पहुँचाया। भारत की आध्यात्मिक और पुरातन गरिमा को पुन: स्थापित किया। उन्हें भारतीय होने का गर्व था। यह बात उस समय की थी जब यूरोपीय और अमेरिका के लोग अपने को सर्वश्रेष्ठ समझते थे तब विवेकानंद ने भारतीय दर्शन का प्रचार और प्रसार किया।

जब उनके गुरु का निधन हो गया था तो उनकी पत्नी शारदा देवी के पास विवेकानंद विदेश जाने की अनुमति मांगने गए थे। उस समय शारदा देवी अपने घर के कामों में व्यस्त थी। विवेकानंद ने उन्हें प्रणाम किया और उन्हें विदेश जाने की बात बताई और उनसे आज्ञा मांगी तब शारदा देवी ने पास में रखा हुआ चाकू मांगा। विवेकानंद ने चाकू उठाया और उनके हाथों में दिया तब शारदा देवी प्रसन्न होकर बोली कि तुम जा सकते हो क्योंकि तुम्हें अपने से ज्यादा दूसरों की चिंता और ध्यान है क्योंकि तुमने चाकू की धार को अपनी तरफ रखा और लकड़ी वाला हिस्सा मेरी तरफ दिया यानी तुमने मेरा खयाल रखा। जो इतनी छोटी-छोटी बातों में सबका खयाल रखता है वह कभी भी किसी का अहित नहीं कर सकता है। मैं तुम्हारे इस व्यवहार से अति प्रसन्न हूँ।

आधुनिक शिक्षा हर व्यक्ति के लिए काफी आवश्यक होती है परंतु उससे पहले अच्छे चरित्र का निर्माण हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। एक बच्चे के चरित्र निर्माण में उसके माता-पिता का प्रमुख योगदान होता है और माता का तो सर्वोपरि योगदान होता है। एक अच्छे चरित्र का व्यक्ति ही एक अच्छा पुत्र और नागरिक हो सकता है। माता-पिता अपने बच्चों का विशेष खयाल रखें उसके व्यवहार का निरीक्षण करें तो समाज में भ्रष्टाचार और अपराध लगभग समाप्त हो जाएगा।

कामना सिंह
भुवनेश्वर

रंगों का त्योहार

रंगों का त्योहार आई है होली
खुशियों की बौछार
लाई है होली
चेहरे पर खुशियाँ आईं
जीभर खेलो - खाओ मिठाई।
खेलें होली एक दूजे के संग,
घर-घर महके
खुशियों की तरंग,
नफरत के मिटा दो रंग
जगाओ प्यार की नई उमंग।
खेलो सब संग प्यार के रंग
दुनिया में फैले प्रेम तरंग।
कड़वाहट की कैद से छूटे
भेदभाव की दूरियाँ हटें।
लेकर मन में नई उमंग
चलो फैलाएं प्रेम तरंग।
सबकी जुबाँ पर एक ही बोली
प्यार की धारा बनेगी होली।

स्नेहा पाल
दामनजोड़ी

तभी तो देश आजाद हुआ.....

(देश के शहीदों को समर्पित)

भारत एक महान देश है जिसका इतिहास बेहद गौरवशाली रहा है। हमारा देश अपने अंदर ऐसी कई संस्कृतियाँ समेटे हुए है जिसने इसे विश्व की सबसे समृद्ध संस्कृति वाला देश बनाया है। यह देश उन वीरों की कर्मभूमि भी रही है जिन्होंने प्राणों की परवाह किए बिना अपनी मातृभूमि को गौरवान्वित किया है। देश की स्वतंत्रता और सुरक्षा के सामने एक राष्ट्रप्रेमी सदैव ढाल बनकर खड़ा रहता है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चाहे सरहद पर तैनात अमर सैनिकों की बात की जाये या फिर देश के क्रांतिकारियों के बलिदान की बात करें, सभी का योगदान अमूल्य है। जो बलिदान और साहस राष्ट्रप्रेमियों में देखने को मिलता है, उसकी तुलना अन्य किसी भी चीज से नहीं की जा सकती। ऐसे अमर शहीदों के बलिदानों का कर्ज तो नहीं चुकाया जा सकता; लेकिन उनके सम्मान में राष्ट्रभक्ति के प्रयासों द्वारा समाज में जागरूकता और साहस का वातावरण उनकी याद द्वारा अवश्य ही बनाया जा सकता है। शहीद दिवस अर्थात एक ऐसा दिन जब पूरा देश इसकी रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान देने वाले शहीदों को नमन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है। शहीद दिवस का इतिहास बहुत पुराना और लंबा है। भारत की पवित्र भूमि पर एक नहीं अपितु अनेक बार महान राष्ट्रप्रेमियों ने आगे आकर भारत माता का कर्ज चुकाया है और देश के लिए शहीद हुए हैं। इतिहास में कई ऐसी अप्रिय घटनाएं घटी हैं जब किसी न किसी कारणवश देश के महान मार्गदर्शक देश से दूर चले गए लेकिन उन्होंने देश के लोगों को राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्व से अवगत कराकर इसका दायित्व भी सौंपा है। यद्यपि देश के लिए कुर्बान होने वाले शहीदों का ऋण चुकाना असंभव है लेकिन उनका पुण्य स्मरण हमें राष्ट्रभक्ति की ऊर्जा से भर देता है। राष्ट्रीय स्तर पर मुख्यतः शहीद दिवस दो दिन मनाया जाता है। पहला है 23 मार्च और दूसरा 30 जनवरी का दिन। प्रथम, 23 मार्च को भारत के तीन असाधारण वीरों, भारत माता के वीर पुत्र भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान को याद किया जाता है। भारत माता के इन सपूतों की गाथा बेहद गौरवशाली रही है। अपने ही देश में अंग्रेजों का अत्याचार सहते हुए भारतीयों की दशा देखकर लाखों क्रांतिकारियों के दिल में बदले की आग जल रही थी, अंग्रेजों के शोषण करने की नीति से पूरा देश बड़ी ही दयनीय स्थिति में था। उस समय जब अंग्रेजों के सामने किसी की बोलने की हिम्मत भी नहीं होती थी, तब भारत माता के इन शेरों ने सेंट्रल असेंबली में धमाका किया, जो कि केवल एक चेतावनी थी; जिसमें किसी को भी चोट नहीं पहुंची थी। इस घटना के बाद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु और उनके अन्य साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। 23 मार्च 1939 वह दिन था जब अंग्रेजों ने कायरता पूर्वक मध्यरात्रि में फांसी की सजा इन अमर शहीदों को दे दी। शहीद दिवस के रूप में जाना जाने वाला यह दिन यूँ तो भारतीय इतिहास में काला दिन माना जाता है, पर स्वाधीनता की लड़ाई में स्वयं को देश की वेदी पर चढ़ाने वाले ये नायक हमारे आदर्श हैं।

द्वितीय, 30 जनवरी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का निधन हुआ था। वे एक ऐसे महात्मा थे जिन्होंने जन-जन को अहिंसा के पथ पर चलते हुए भारत को स्वतंत्र कराने की प्रेरणा और बल दिया था। उनके साधारण से दिखने वाले किन्तु महान व्यक्तित्व ने अंग्रेजों को भी हिलाकर रख दिया था। इसी कारण उनकी पुण्यतिथि (30 जनवरी 1948) को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हम भारतीयों की यही भावनाएं हैं-

"इंकलाब की आग देश में, खुद जलकर भी लगाया था
मूंदकर आंखें सोये थे जो, फोड़कर बम यूँ जगाया था।"

"सच्चे सपूत थे भारत माता के, अपना सुख-दुःख सब भूल गए,
माता की बेड़ी तोड़ने को, हंसकर फांसी में झूल गए।"

"मैं जला हुआ राख नहीं, अमरदीप हूँ,
जो मिट गया वतन पर, मैं वो शहीद हूँ।"
"मिटा दिया है वजूद उनका, जो भी इनसे भिड़ा है,
देश की रक्षा का संकल्प लिए,
जो जवान सरहद पर खड़ा है।"
"लड़े वो वीर जवानों की तरह, ठंडा खून फौलाद हुआ,
मरते-मरते भी कई मार गिराए,
तभी तो देश आजाद हुआ।"
"जो देश पर शहीद हुए, उनको मेरा सलाम है,
अपने खून से जिसने जमीं को सींचा है,
उन बहादुरों को सलाम है।"

"जश्न-ए-आजादी मुबारक हो, देश वालों को,
फंदे से मुहब्बत थी, हम वतन के मतवालों को।"
शहीद दिवस को मनाकर हम न केवल शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं अपितु आज की पीढ़ी को उन शहीदों के जीवन और बलिदानों से परिचित भी कराते हैं। आजादी के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की भी चिंता नहीं की, अतः इतनी कठिनाइयों से मिली इस स्वाधीनता के मूल्य को समझने के लिए और वीर रस का संचार करने के लिए भी इस दिन को मनाना नितांत आवश्यक है।
जय हिन्द, जय भारत

कल्पना दुबे
दामनजोड़ी

नालको स्थापना दिवस

पूर्व तटीय पहाड़ों पर
लाल मिट्टी में
सोने जैसी खनिज है पाई
धरती को आसमान से जोड़े
दामनजोड़ी मानचित्र पर उभर आई
इंदिरा प्रियदर्शिनी के
कर-कमलों से
7 जनवरी को स्थापना हुई
नेशनल एल्यूमिनियम के
नामकरण से ओडिशा का
भाग्य है चमकाई

लाखों इंजीनियरों का सपना
साकार होते हुए दिखा
एल्यूमिनियम के जगत में
नई क्रांति ले आई
संस्थापकों और परिजनों ने
ऐसी मजबूत नींव है बिछाई
जिनकी लगन, उत्कृष्टता और
आत्मनिर्भरता से उन्नति की तरंग है लाई

चार दशक से ओडिशा की गरिमा है बढ़ाई
दशों दिशाओं, देश-विदेशों में
अपनी छाप है छोड़ आई
नालको की बेटी, संस्कृति के उत्थान से
नया इतिहास है रचाई
"नालकोनियन" से संबोधित हो
स्वयं ही गौरवान्वित हो पाई।

वी अनुराधा
दामनजोड़ी

वीर शहीद

"मैं जला हूँ, राख नहीं अमरदीप हूँ
जो मिट गया वतन पर, मैं वह शहीद हूँ।"

भारत की आजादी, कल्याण और उन्नति के लिए लड़े और अपने प्राणों का बलिदान देने वाले वीर लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए '**शहीद दिवस**' मनाया जाता है। शहीद दिवस मुख्य रूप से भारत में हर साल 30 जनवरी और 23 मार्च को मनाया जाता है। 23 मार्च को शहीद दिवस भारत के तीन साधारण क्रांतिकारियों (भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु) की पुण्यतिथि के रूप में मनाया जाता है जिन्हें अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया था। जबकि 30 जनवरी को नाथूराम गोडसे द्वारा महात्मा गांधी को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

'लिख रहा हूं मैं, अंजाम जिसका कल आगाज आएगा,
मेरे लहू का हर एक कतरा इंकलाब लाएगा।'

शहीद दिवस के दिन राजघाट पर प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और अन्य नेताओं द्वारा शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है, देशभर के लोग शहीदों के चित्र पर माला डालकर ध्वजारोहण कर शहीद दिवस मनाते हैं। स्कूल, शैक्षणिक, सामाजिक संस्थानों में शहीदों के योगदान को याद करने के लिए भाषण और बैठकों का आयोजन किया जाता है। बच्चे गांधीजी की वेशभूषा में सजधज कर आते हैं और अपनी प्रस्तुति देते हैं साथ ही शहीद दिवस पर सशस्त्र बल के जवान राजघाट पर शहीदों को सम्मानजनक सलामी देते हैं और शपथ लेते हैं ।

'शहीदों के बलिदान को हम बदनाम नहीं होने देंगे,
भारत की इस आजादी की कभी शान कम नहीं होने देंगे।'

शहीद दिवस हमें शहीदों के बलिदान की याद दिलाता है जिन्होंने हमारी पीढ़ी को गुलामी से आजादी दिलाने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

'मिटा दिया है वजूद उनका जो भी उनसे भिड़ा है,
देश की रक्षा का संकल्प लिए जो जवान सरहद पर खड़ा है।'

शहीद दिवस स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने का अवसर देता है। यह उन समारोहों में से एक है जो देशवासियों को उनकी जाति और कर्म के बावजूद एक सूत्र में बाँधता है।

'सीने में जुनून, आंखों में देशभक्ति की चमक रखता हूँ..
दुश्मनों की सांसें थम जाए, आवाज में वह धमक रखता हूँ..।'

शहीद दिवस युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य करता है। भारत में कुष्ठ रोगों से लड़ने हेतु बापूजी की प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने के लिए शहीद दिवस को "एंटीलेप्रसी डे" के रूप में मनाने का फैसला लिया गया है। कई क्षेत्रों में शौर्य कवि सम्मेलनों का आयोजन भी किया जाता है। वास्तव में शहीद दिवस उन अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का दिन होता है जिन्होंने देश के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण त्याग दिए।

'आजादी मुबारक हो देश वालों को,
फंदे से मुहब्बत थी उन वतन के मतवालों को,
जो देश पर शहीद हुए उनको मेरा सलाम है,
अपने खून से जिसने जमीं को सींचा है उन बहादुरों को मेरा सलाम है।'

ऐसे मौके हमारे अंदर भी देश के लिए शहीद होने और देश प्रेम की भावना भर देते हैं। अंत में जो बलिदान और साहस राष्ट्र प्रेमियों में देखने को मिलता है उसकी तुलना और किसी से भी नहीं की जा सकती है। ऐसे अमर शहीदों का कर्ज कभी नहीं चुकाया जा सकता है लेकिन उनके सम्मान में उनके शौर्य को राष्ट्रीय भक्ति के प्रयासों द्वारा समाज में जागरूकता फैलाने के लिए प्रदर्शित किया जा सकता है।

'आओ झुककर करें सलाम उन्हें, जिनके हिस्से में ये मुकाम आता है,
कितने खुशनसीब हैं वो लोग
जिनका लहू वतन के काम आता है'

तनु अग्रवाल
दामनजोड़ी

टूटे खिलौनों का मोल

त्योहारों का था मौसम,
सोचा साफ़ कर लूँ थोड़ा घर
जरूरत के सामानों को
अंदर रखूँ और,
गैरजरूरी बाहर !
किताबें मिलीं, कपड़े मिले;
और मिले कुछ टूटे खिलौने,
बचपन में जिनसे सजते थे
घर के हर कमरे हर कोने,
तब तो ये अनमोल थे पर अब इनका रहा न कोई अर्थ,
अब इनका मैं क्या करूँ? ये तो बस पड़े हैं व्यर्थ,
समेट इन्हें मैंने कोने में मेज पर रख दिया बाहर,
सोचा सुबह-सुबह कचरे वाला ले जाएगा आकर,
बस्ती का एक छोटा बच्चा पास से ही गुजरा,
टूटे खिलौनों को देखकर लालची नजरों से थोड़ा ठहरा;
पूछा दीदी वो कार तो बहुत तेज भागती होगी ना !
बंदूक, नाव, गुड़िया और वो जहाज ऊँची उड़ती होगी ना!
कार तेज चलती थी पर अब उसका एक पहिया टूट गया,
जहाज का पता नहीं बहुत दिनों से हमारा साथ छूट गया,
तो क्या अब आप इनसे बिल्कुल भी नहीं हो खेलती;
यूँ बाहर क्यों रखा है? इन्हें ये तो होंगे बहुत ही कीमती,
अरे नहीं-नहीं ये तो अब बहुत पुराने हो गए;
कुछ चलते नहीं हैं और कुछ के पुर्जे कहीं खो गए,
तो फिर मुझे ही दे दीजिए आप अपने टूटे खिलौने!
आपके लिए ये व्यर्थ हैं पर हमारे लिए हैं सपने!
सुन उसकी बातें आंखें हुई नम, सारी भावनाएं गई डोल.
उस दिन पहली बार जाना मैंने टूटे खिलौनों का मोल!!

स्वाती तिवारी
अनुगुळ

ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଦିବସ

ନାଲକୋ ନାମକ ଭିତ୍ତିପ୍ରସ୍ତର
ସ୍ଥାପିତ ବେଳେ
ଉଲ୍ଲସିତ ମନେ କୋଟିଏ ଜନର
ସ୍ୱପ୍ନକୁ ସାଥେ ଧରି
ସଂକଳ୍ପ ତାଳେ ଯୁଗେଯୁଗ ଧରି
ନିର୍ମାଣଅର୍ଥେ ଗଢି ତୋଳି ବସେ
ସୁଖ ସୌହାର୍ଦ୍ଦ୍ୟର ସମାହାରେ
ପରାକାଷ୍ଠା ପରେ
ସ୍ଥିତି ପରିସ୍ଥିତିରେ
ସେ ସନ୍ତର୍ପେ ଆହୁଲା ଧରି
ଦିନ ପରେ ଦିନ ଯୁଗ ପରେ ଯୁଗ
ସମୟ ସ୍ରୋତର ଭଉଁରୀକି ପାରକାରି
କଷଟି ପଥରେ ନିଜକୁ କଷି ସେ
ଅଚିରେ ହୋଇଛି ପାରି

ନିଜେ ଆଜି ନିଜ ପରିଚୟ ଦେଇ
ଶିଳ୍ପକୁ ଧରି ଶିଳ୍ପୀ ହାତରେ
ସୁଖ ସମୃଦ୍ଧିର ସମ୍ଭାରକୁ ରଖି
ଧରାପୃଷ୍ଠରେ ସ୍ଥାପିତ ସେ ନିର୍ବିଘ୍ନରେ
ଅନ୍ୟର ସୁଖରେ ଦୁଃଖରେ
ହୋଇ ଉଠେ ସେ ସକ୍ରିୟ
କୋଟି କୋଟି ଜନ ମୁଖେ ହସ
ସେ ଖେଳାଏ
ଜୀବନ ଜୀବିକା ନିର୍ବାହ ଅର୍ଥେ
ହାତେ ହାତ ରଖି ଜନେ ଜନ ନେଇ
ନିଜ ସାଧ ବଳେ ହୋଇ ପାରିଛି ସେ
ନବରତ୍ନର ଆଭୂଷଣେ ଶୋଭିତ
ପରିଚୟ ଦିଏ ପରିଚୟ ପାଏ
ଯିଏ ତା'ର ନାମେ
ହୋଇଅଛି ଅଳଙ୍କୃତ.....

ଜୟଶ୍ରୀ ଡାକୁଆ
ଅନୁଗୁଳ

ସେଦିନର ସରସ୍ୱତୀ ପୂଜା

ମିରାର ଜେଜେବାପା ଜମିଦାର ଥିଲେ। ଆଖପାଖରେ ବହୁତ ନାଁ ଡାକ ଥିଲା ତାଙ୍କର। ଧଳା ଫର୍‌ଫର୍ ଧୋତି ପଞ୍ଜାବୀ ପିନ୍ଧି ରାସ୍ତାରେ ଚାଲିଗଲେ କାମ କଲାଲୋକ ବୁଲି ଚାହିଁନ୍ତି ଘଡ଼ିଏ। ଖୁବ୍ ଆକର୍ଷଣୀୟ ଚେହେରା ଥିଲା ତାଙ୍କର। ସେ ବହୁତ ସ୍ନେହୀ ଥିଲେ। ବାଟରେ ଯାହାକୁ ଦେଖନ୍ତି ଘଡ଼ିଏ କଥା ନହେଲେ ଆଗକୁ ଯାଉନଥିଲେ। ଖୁବ୍ ବଡ଼ ପରିବାର ଥିଲା ଜେଜେଙ୍କର। ଛଅ ପୁଅରେ ଗୋଟିଏ ଝିଅ ତାଙ୍କର। ଖୁବ ଛୋଟବେଳୁ ଝିଅକୁ ବାହାକରି ଦେଇଥିଲେ ଜେଜେ। ଛଅପୁଅ, ବୋହୂରେ ଜେଜେଙ୍କର ଘର ପୂରି ଉଠିଲା। ଧିରେଧିରେ ନାତି, ନାତୁଣୀଙ୍କର କଳରବରେ ଘର ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଉଠିଲା। ତା'ପରେ ଗୁରୁଜୀ ଆସିଲେ ଘରକୁ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଶିକ୍ଷାଦାନ କରିବାକୁ।

ମିରାର ମନେଅଛି ଗୁରୁଜୀଙ୍କର ଆସିବା ଦିନ କିପରି ଘରର ବାତାବରଣ ପୁରା ଗମ୍ଭୀର ଥିଲା। ବାହାରେ ଗୋଟିଏ କୁମ୍ଭରେ ପାଣି ଆଉ ପାଖ ଷ୍ଟୁଲ ଉପରେ ଗାମୁଛାଟିଏ ସଜଡ଼ା ହୋଇ ରଖାଯାଇଥାଏ। ଜେଜେବାପା ଦୁଇଜଣ ଲୋକଙ୍କୁ ପଠେଇଥିଲେ ଗୁରୁଜୀଙ୍କୁ ଡାକିଆଣିବାକୁ। ପାଖ ଗାଁରେ ଗୁରୁଜୀଙ୍କର ଘର। ତାଙ୍କର ବହୁତ ନାଁ ଡାକ ଥିଲା। ତାଙ୍କ ପାଖରେ ପଢୁଥିବା ସବୁ ଛାତ୍ର ଭଲ ପଢ଼ନ୍ତି ବୋଲି ସମସ୍ତେ କୁହନ୍ତି। ଗୋଟିଏ ତିନିହାତିଆ ବେତକୁ ଧରି ଗୁରୁଜୀ ପଢାଇବାକୁ ଆସନ୍ତି। ପଣିକିଆ ଡାକିବାକୁ କୁହନ୍ତି। ଟିକିଏ ଭୁଲ କଲେ ପିଟିପକାନ୍ତି ବୋଲି ସଭିଏଁ କୁହନ୍ତି। ଛବିଳ ମଧୁ ବର୍ଣ୍ଣବୋଧ ଏମିତି ପଢ଼ାନ୍ତି ଗୁରୁଜୀ ଯେ ସବୁ ପିଲାଙ୍କର ମୁଖସ୍ଥ ହୋଇଯାଏ। ଗୁରୁଜୀଙ୍କର ସବୁ ଭଲଗୁଣ ଭିତରେ ତାଙ୍କର ବେତରେ ପିଟିବା ଗୁଣକୁ ଜେଜେ ଜମାରୁ ଗ୍ରହଣ କରିପାରୁନଥିଲେ। ହେଲେ ଜେଜେମା କହିଲେ ବେତମାଡ଼ ନ ବାଜିଲେ ପିଲାମାନେ କ'ଣ ମଣିଷ ହେବେ।

ଯାହାହେଉ ସେଦିନ ଗୁରୁଜୀ ଆସି ପହଞ୍ଚିଲେ। ତାଙ୍କୁ ଅନେକ ଆଦର, ସମ୍ମାନର ସହ ଘରକୁ ପାଛୋଟି ନିଆଗଲା। ତାଙ୍କର ନୂଆ ଛାତ୍ର, ଛାତ୍ରୀଙ୍କ ସହ ପରିଚୟ ହେଲା। ମୁଁ, ମୋର ସାନଭାଇ ରାଜା, ଓମ୍ ଆଉ ଭଉଣୀ କୁନି। ଛୋଟ ହେଲେବି ସେ ପଢ଼ାରେ ବସିବ ବୋଲି ଜେଜେ କହିଲେ। ସବୁ କଥାବାର୍ତ୍ତା ସରିବାପରେ ସରସ୍ୱତୀ ପୂଜା ଦୁଇଦିନ ପରେ ପଡୁଥିବାରୁ ଗୁରୁଜୀ କହିଲେ, ସରସ୍ୱତୀ ପୂଜା ଦିନ ସବୁରି ବହିଖାତା ପୂଜା ହେବ। ତା'ପରେ ପାଠପଢ଼ା ଆରମ୍ଭ ହେବ। ମା' ସରସ୍ୱତୀଙ୍କର ଗୋଟିଏ ମୂର୍ତ୍ତି ଜେଜେ କିଣି ଆଣିଲେ। ଆମେ ସବୁ ଛୋଟଥିଲେ ବି ସଜାସଜି କରିବାରେ ଲାଗିପଡିଲୁ। ନାଲି, ନେଳି ପତାକା ଓ ଝାଲେରୀ ସବୁ ଜେଜେ କାଟିଦେଲେ। ଦଉଡ଼ିରେ ଅଠାମାରି ଆମେ ସବୁ ଘରେ ଓ ଗେଟ୍‌ରୁ ଘରଯାଏ ସଜେଇ ଦେଲୁ। ବୋଉ, ଜେଜେମା, ଖୁଡ଼ୀ ସମସ୍ତେ ମିଶି ମଣ୍ଡା, କାକରା, ଉଖୁଡ଼ା, ନଡ଼ିଆ କୋରା ମିଠେଇ ତିଆରି କରିବାରେ ଲାଗିପଡ଼ିଲେ। ସକାଳୁ ଉଠି ବୋଉ, ଖୁଡ଼ୀଙ୍କ ସହ ଆମେ ସବୁ ଫୁଲ ତୋଳି ଆଣିଲୁ ସୁନ୍ଦର ଧଳା, ହଳଦୀ ଫୁଲର ମାଳାରେ ଗୋଲାପ ଫୁଲର ଲକେଟ ଦେଇ ଗୁନ୍ଥିଦେଲୁ। ମାଆ ହାରପିନ୍ଧି

ଖୁବ୍ ସୁନ୍ଦର ଦିଶୁଥାନ୍ତି। ଆମେ ସମସ୍ତେ ନୂଆ ଜାମା, ଫ୍ରକ୍ ପିନ୍ଧି ଖୁବ୍ ଖୁସିଥାଉ। ଆମେ ଆମର କୁନି ହାତରେ ବୋଉ, ଖୁଡ଼ୀଙ୍କ ସହ ସୁନ୍ଦର ଚିତା ପକେଇ ଘର ସଜେଇବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କଲୁ। ଆମର ନୂଆ ବହି, ଖାତା, ସିଲଟ, ଖସି ସବୁ ପୂଜା କରିବାକୁ ପିଢ଼ା ଉପରେ ନୂଆ କପଡ଼ା ପକେଇ ରଖିଦେଲୁ। ଜେଜେମା, କଳସ ବସେଇ ଦେଲେ। ବ୍ରାହ୍ମଣ ଭାଇନା ଆସିଗଲେ ଓ ତାଙ୍କ ସହ ଗୁରୁଜୀ ବି ଆସି ପହଞ୍ଚିଗଲେ, ତା'ପରେ ଗୁରୁଜୀ ଆସନ ପକେଇ ମା' ସରସ୍ୱତୀଙ୍କ ପାଖରେ ବସିଗଲେ। ଆମେ ସମସ୍ତେ ଓ ଜେଜେ ବସିଗଲୁ। ପୂଜା, ହୋମ ସବୁ ସରିଲା। ମାଆଙ୍କର ଆବାହନ ହେଲା। ମନ୍ତ୍ରପାଠ, ଝୁଣା, ଧୂପ, ଦୀପରେ ଆମ ଘରର ବାତାବରଣ ପବିତ୍ର ଲାଗୁଥାଏ। ତା'ପରେ ଆମର ଖଡ଼ିଛୁଆଁ ହେଲା ଗୁରୁଜୀଙ୍କ ହାତରେ। ନୂଆ ନୂଆ ସିଲଟ, ଖଡ଼ିଧରି ଆମେ ଜଣଙ୍କ ପରେ ଜଣେ ବ୍ରହ୍ମା, ବିଷ୍ଣୁ ଓ ମହେଶ୍ୱର ସମାହାର ଅବତାର ଗୁରୁଜୀଙ୍କ ହାତ ଧରି ଲେଖିଲୁ। ମା' ସରସ୍ୱତୀଙ୍କୁ ମୁଣ୍ଡିଆ ମାରିଲୁ। ଗୁରୁଜୀଙ୍କ ସହିତ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ପ୍ରଣାମ କଲୁ। ପରେ ଆମ ପାଠପଢ଼ା ଗୁରୁଜୀଙ୍କର ତତ୍ତ୍ୱାବଧାନରେ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଗଲା। ଗୁରୁଜୀ ଆମକୁ ଗୋଟିଏ ସୁନ୍ଦର ସରସ୍ୱତୀ ବନ୍ଦନା ଶିଖାଇଦେଲେ। ସବୁଦିନ ଗାଇବାକୁ କହିଲେ। ଆମେ ମା'ଙ୍କ ପାଖରେ ସବୁଦିନ ସେ ବନ୍ଦନାଟି ଗାଇ ଗାଇ ମୁଖସ୍ଥ କରିଦେଲୁ। ଆଜି ବି ଆମେ ସମସ୍ତେ ସବୁଦିନ ସେ ବନ୍ଦନାଟି ମାଙ୍କ ପାଖରେ ଗାଇବା ବେଳେ ଗୁରୁଜୀଙ୍କ ପ୍ରତି ଶ୍ରଦ୍ଧାରେ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆଁଇଥାଉ। ମା'ଙ୍କର କୃପାରୁ, ଗୁରୁଜୀ, ଜେଜେ, ଜେଜେମା, ବୋଉ, ବାପା, ଖୁଡ଼ୀ ସବୁ ବଡ଼ମାନଙ୍କର ଆଶୀର୍ବାଦରୁ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଉଚ୍ଚପଦବୀରେ କର୍ତ୍ତବ୍ୟରତ ଅଛୁ। ମୁଁ ମୋ ପିଲାମାନଙ୍କ ସହ ଆଜିବି ମାଆ ସରସ୍ୱତୀଙ୍କୁ ପୂଜା କରିବାକୁ କେବେବି ଭୁଲି ନଥାଏ।

ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ ଜୟନ୍ତୀ

ପୂଣ୍ୟଭୂମି ଭାରତ ବର୍ଷ ବହୁ ପ୍ରାଚୀନ କାଳରୁ ନିଜର ସୁଖ୍ୟାତି ଅର୍ଜନ କରିଛି। କ୍ଷଣଜନ୍ମା, ମହାମନା, ମହାପୁରୁଷ ଓ ମନିଷୀମାନଙ୍କର ମହାନ୍ ଅବଦାନ। ଜ୍ଞାନ ବିଜ୍ଞାନ, ସଭ୍ୟତା, ସଂସ୍କୃତି, ଧର୍ମକର୍ମ, ଦର୍ଶନ ପାଇଁ ପୃଥିବୀରେ ଅର୍ଜନ କରିଛି ସୁଖ୍ୟାତି। ଏମିତି ଜଣେ ମହାପୁରୁଷ ହେଉଛନ୍ତି ଭାରତୀୟ ଦର୍ଶନ ଓ ସଂସ୍କୃତିର ବାର୍ତ୍ତାବାହକ, ଯୁଗପୁରୁଷ ସ୍ୱାମୀ-ବିବେକାନନ୍ଦ। ହିନ୍ଦୁ ନବଜାଗରଣରେ ସେ ଥିଲେ ସାରଥି। ତାଙ୍କରି ପାଇଁ ସର୍ବ ପୁରାତନ ସନାତନ ଧର୍ମର ବିଜୟ ପତାକା ସାରାବିଶ୍ୱରେ ଫର୍‌ଫର୍ ହୋଇ ଆଜି ଉଡୁଛି। ପଥହରା ମଣିଷମାନଙ୍କୁ ଯେ ସେ କେବଳ ପଥ ଦେଖାଇ ଥିଲେ ତା' ନୁହେଁ ବରଂ ପ୍ରତ୍ୟେକଙ୍କ ଭିତରେ ନବଜୀବନର ସଞ୍ଚାର କରାଇଥିଲେ। ତେଣୁ ତ୍ୟାଗୀ ଯୋଗୀ ଓ ବିଶ୍ୱବିଜୟୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କୁ ଜନ୍ମଦେଇ ଭାରତ ଜନନୀ ଧନ୍ୟ।

ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ ଜାନୁୟାରୀ ମାସ ୧୨ ତାରିଖ ୧୮୬୩ ମସିହାରେ କଲିକତାର ଶିମୁଳିଆ ପଲ୍ଲୀର ଦତ୍ତ ପରିବାରରେ ଜନ୍ମ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ। ଭାଗ୍ୟବାନ୍ ପିତା ବିଶ୍ୱନାଥ ଦତ୍ତ ଓ ସୌଭାଗ୍ୟବତୀ ଜନନୀ ଭୁବନେଶ୍ୱରୀ ଦେବୀଙ୍କର ସେ କୋଳ ମଣ୍ଡନ କରିଥିଲେ। ପିତା କୋଲକାତା ଉଚ୍ଚ ନ୍ୟାୟାଳୟରେ ଜଣେ ପ୍ରଖ୍ୟାତ ଆଇନଜ୍ଞ ଥିଲେ। ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ବାଲ୍ୟନାମ ଥିଲା ନରେନ୍ଦ୍ର ନାଥ। ତାଙ୍କର ଅନ୍ୟନାମ ଥିଲା ବୀରେଶ୍ୱର। ଶ୍ରଦ୍ଧା ନାମ ଥିଲା 'ବିଲେ'। ସ୍ୱୟଂ ବିଶ୍ୱେଶ୍ୱର ଶିବ ବିବେକାନନ୍ଦ ରୂପରେ ଜନ୍ମ ଗ୍ରହଣ କରିଥିବା କଥା କିମ୍ବଦନ୍ତୀ କହେ। ଛ' ବର୍ଷ ବୟସରେ ନରେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପଢ଼ିବା ପାଇଁ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ନାମ ଲେଖାଇଥିଲେ। ଇଂରାଜୀ ପାଠ ପଢ଼ିବା ପାଇଁ ପ୍ରଥମରୁ ତାଙ୍କର ରୁଚି ନ ଥିଲା। ଘଣ୍ଟାଏ ପଢ଼ି ପାଠକୁ ମନେ ରଖୁଥିଲେ। ପିଲାଦିନରୁ ଛୁଆଁ-ଅଛୁଆଁ ଭେଦଭାବ ତାଙ୍କର ନ ଥିଲା। ମାତାଙ୍କ ଠାରୁ ରାମାୟଣ ଓ ମହାଭାରତର ମନଛୁଆଁ କାହାଣୀ ଶୁଣି ସେ ଈଶ୍ୱର ବିଶ୍ୱାସୀ ହୋଇ ପାରିଥିଲେ।

ବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷାର ପରିସମାପ୍ତି ପରେ ନରେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଖ୍ୟାତ ପ୍ରେସିଡେନ୍ସ କଲେଜର ଛାତ୍ର ଥିଲେ। କଲେଜ ଜୀବନର ଶେଷ ତିନିବର୍ଷ ସେ ଜେନେରାଲ ଆସେମ୍ବ୍ଲି ଇଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍‌ରେ ଅଧ୍ୟୟନ କରିଥିଲେ। କଲେଜର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଉଇଲିୟମ ହେଷ୍ଟିଙ୍ଗ ଏକ ଆଲୋଚନା ସଭାରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରିଥିଲେ- ଜର୍ମାନ୍ ଏବଂ ଇଂଲଣ୍ଡର ସବୁ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଖୋଜିଲେ ନରେନ୍ଦ୍ରଙ୍କ ଭଳି ଜଣେ ଛାତ୍ର ମିଳିବା କଷ୍ଟକର। କଲେଜ ଜୀବନରେ ଈଶ୍ୱରଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ପ୍ରଶ୍ନ ତାଙ୍କୁ ବିଚଳିତ କରିଥିଲା।

ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ଗୁରୁଥିଲେ ସ୍ୱାମୀ ରାମକୃଷ୍ଣ ପରମହଂସ। ଗୁରୁଙ୍କର ଆଶୀର୍ବାଦ ଲାଭପରେ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ଜୀବନର ଦିଗ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇଥିଲା। ୧୮୮୪ ଖ୍ରୀଷ୍ଟାବ୍ଦରେ ପିତାଙ୍କର ସ୍ୱର୍ଗବାସ ପରେ ଦୁଃଖ କଷ୍ଟର ଅଗ୍ନିଦାହ ମଧ୍ୟରେ ସେ ବିଚଳିତ ନ ହୋଇ ରକ୍ଷା କରିପାରିଥିଲେ ନିଜର ଆତ୍ମମର୍ଯ୍ୟାଦା। ଧିରେଧିରେ ରାମକୃଷ୍ଣଙ୍କର ଶିଷ୍ୟ ହୋଇ ତାଙ୍କରି ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କ୍ରମେ ଲାଭକଲେ ମାତୃକୃପା। ୧୮୮୬ ମସିହାରେ ସନ୍ନ୍ୟାସ ଦୀକ୍ଷାନେଇ ସ୍ୱାମିଜୀ ଭାବରେ ପରିଚିତ ହେଲେ।

ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ କାଶୀ, ଆଯୋଧ୍ୟା, ଋଷିକେଶ, ହିମାଳୟ ଓ ରାଜପୁତାନା ଆଦି ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳ ଭ୍ରମଣକରି କନ୍ୟାକୁମାରୀରେ ପଦାର୍ପଣ କଲେ। ସେଠାରେ ଧ୍ୟାନସ୍ଥ ଅବସ୍ଥାରେ ଭାରତର ପ୍ରକୃତ ରୂପ ଅନୁଭବ କଲେ। ପରେ ସେ ମାନ୍ଦ୍ରାଜ ଗଲେ। ସେଠାରେ ଅଗଣିତ ଛାତ୍ର, ଯୁବକ, ଅଧ୍ୟାପକ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀ ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ନବଜାଗରଣ ବାଣୀରେ ଉଦ୍‌ବୁଦ୍ଧ ହେଲେ। ମାନ୍ଦ୍ରାଜର ଜନସାଧାରଣ ଓ ଗୁରୁଦେବ ଶ୍ରୀରାମକୃଷ୍ଣଙ୍କର ପ୍ରେରଣାରେ ସେ ଉଦ୍‌ବୁଦ୍ଧ ହୋଇ ଚିକାଗୋ ସହରକୁ ଯାତ୍ରା କଲେ। ସେଠାରେ ସେ ନିଜର ସନ୍ୟାସୀ ବେଶ ପୋଷାକ ପାଇଁ ଚିକାଗୋ ସହର ବାସିନ୍ଦାମାନେ ତାଙ୍କୁ ବ୍ୟଙ୍ଗ ବିଦ୍ରୂପକରି ଅପମାନ କରିଥିଲେ। ୧୮୯୩ ସେପ୍ଟେମ୍ବର ୧୧ ତାରିଖରେ ଧର୍ମସମ୍ମିଳନୀର ବିରାଟ କକ୍ଷରେ ସେ ପ୍ରଥମେ ଦେବୀ ସରସ୍ୱତୀଙ୍କୁ ପ୍ରଣାମକରି 'ମୋର ଆମେରିକାର ପ୍ରିୟ ଭାଇ-ଭଉଣୀମାନେ' ସମ୍ବୋଧନ କଲେ ଓ ଭାଷଣ ପ୍ରଦାନ କଲେ। ଶ୍ରୋତାମଣ୍ଡଳୀଙ୍କ କରତାଳିରେ ସଭାକକ୍ଷ ପ୍ରକମ୍ପିତ ହେଲା। ବିବେକାନନ୍ଦ 'ବସୁଧୈବ କୁଟୁମ୍ବକମ୍' ଉପରେ ଭାଷଣ ଦେଇ ବିଶ୍ୱବିଖ୍ୟାତ ହେଲେ। ୨୬ ତାରିଖ ଉଦ୍‌ଯାପନୀ ଉତ୍ସବରେ ନିଜର ବକ୍ତବ୍ୟ ଉପସ୍ଥାପନ କରି କହିଥିଲେ- ଆଜିଠାରୁ ସବୁ ଧର୍ମର ପତାକାରେ ଲେଖିଦିଅ- ଯୁଦ୍ଧ ନୁହେଁ ଶାନ୍ତି, ଧ୍ୱଂସ ନୁହେଁ ଗଠନ, ଦ୍ୱନ୍ଦ ନୁହେଁ ସହାବସ୍ଥାନ ମନୁଷ୍ୟ ସମାଜର ପାଥେୟ ହେଉ। ୧୮୯୫ରେ ସେ ଇଉରୋପ ଯାତ୍ରାକଲେ। ବିଭିନ୍ନ ଦେଶରେ ଓଜସ୍ୱିନୀ ବକ୍ତୃତା ଦ୍ୱାରା ସେ ଜନପ୍ରିୟ ହେଲେ। ଇଂରେଜ ଜାତି ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କୁ ଯୁଗାଚାର୍ଯ୍ୟ ରୂପେ ଗ୍ରହଣ କଲେ। ପାଶ୍ଚାତ୍ୟବାସୀଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟିରେ ସେ ମହାନ୍ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ଭାବରେ ପରିଚିତ ହେଲେ। ଲଣ୍ଡନରେ ଏକ ବକ୍ତୃତା ସଭାରେ ମିସ୍ ନୋବେଲ୍ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱରେ ମୁଗ୍ଧହୋଇ ଶିଷ୍ୟତ୍ୱ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ। ଭାରତରେ ନିଜ ଜୀବନକୁ ସେବା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉତ୍ସର୍ଗକରି ବିଶ୍ୱରେ ସେ ଭଗିନୀ ନିବେଦିତା ନାମରେ ବିଖ୍ୟାତ ହୋଇଥିଲେ।

ଶ୍ରୀ ରାମକୃଷ୍ଣ ଦେବଙ୍କ ଆଦର୍ଶ ଓ ଦର୍ଶନର ପ୍ରଚାର ଓ ପ୍ରସାର ନିମିତ୍ତ 'ଶ୍ରୀ ରାମକୃଷ୍ଣ ମିଶନ' ନାମରେ ଏକ ସଂଘ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କଲେ। ଜନସାଧାରଣଙ୍କ ସେବା, ସେମାନଙ୍କୁ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପଥରେ ପରିଚାଳନା ତଥା ହିନ୍ଦୁଧର୍ମର ମହାନତା ବିଷୟରେ ଦେଶବିଦେଶରେ ପ୍ରଚାର କରିବା ଦାୟିତ୍ୱ ରାମକୃଷ୍ଣ ମିଶନ୍ ନିର୍ବାହ କରୁଛି। ୧୮୯୭ ଫେବୃୟାରୀ ୨୮ ତାରିଖରେ କଲିକତାରେ ଏକ ସଭାରେ ଉଦ୍‌ବୋଧନ ଦେବାକୁ ଯାଇ କହିଥିଲେ 'ଉଠ ଜାଗ୍ରତ ହୁଅ, ଯେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ନିଜର ଲକ୍ଷ୍ୟସ୍ଥଳରେ ନ ପହଞ୍ଚୁଛ, ସେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିଶ୍ରାମ ନିଅ ନାହିଁ।' କାରଣ ମାତୃଭୂମି ତୁମ୍ଭମାନଙ୍କଠାରୁ ଏହି ବଳିଦାନ ଆଶା କରୁଛି। ଏହି ଆହ୍ୱାନ ତାଙ୍କର ଦେଶବାସୀଙ୍କ ମନରେ ଦୃଢ଼ ବିଶ୍ୱାସ ସଞ୍ଚାର କରିଥିଲା।

ଭାରତଭୂମି ଭାରତ ଯୁଗ ପୁରୁଷ ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କର ଆତ୍ମା। ସେ ଯେଉଁ ଦେଶକୁ ଯାଇଛନ୍ତି ସେଠାରେ ଭାରତର ସଂସ୍କୃତି, ସନାତନ ଧର୍ମର ମହନୀୟତା ପ୍ରତିପାଦନ କରିଛନ୍ତି। ଭାରତର ପୂର୍ବ ଗୌରବକୁ ସ୍ମରଣ କରାଇ ଲୋକଙ୍କ ମନରେ ଭାରତୀୟତା ଜାଗ୍ରତ କରିଥିଲେ। ସେ ବୁଝିଥିଲେ, ଯୁବ ସମାଜର ଉଦ୍ୟମରେ ହିଁ ଭାରତର ଦୂରାବସ୍ଥା ଦୂର ହୋଇପାରିବ। ଯୁବ ସମାଜକୁ ପ୍ରେରଣା ଦେଇ କହୁଥିଲେ 'ହେ ମୋର ଯୁବବନ୍ଧୁଗଣ, ତୁମ୍ଭେମାନେ ତେଜସ୍ୱୀ ହୁଅ, ସାହସୀ ହୁଅ। ଶରୀରକୁ ଶକ୍ତକରି ଗଢ଼ି ତୋଳ।' ତାଙ୍କ ମତରେ ଭାରତହିଁ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ମାର୍ଗରେ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱକୁ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେଇପାରିବ। ବିଶ୍ୱମାନବର ପ୍ରାଣତନ୍ତ୍ରୀରେ ଶାନ୍ତି, ପ୍ରୀତି ଓ ମୈତ୍ରୀର ସ୍ୱର ଝଙ୍କାର ସୃଷ୍ଟି କରିବାକୁ ସମର୍ଥ ହେବ। ୧୯୦୨ ଜୁଲାଇ ୪ ତାରିଖରେ ୩୯ ବର୍ଷ ବୟସରେ ଯୋଗଜନ୍ମା, ଯୁଗପୁରୁଷ ଓ ବିଶ୍ୱବନ୍ଦିତ ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ମହାପ୍ରୟାଣ ହୋଇଥିଲା। ସ୍ୱର୍ଗପ୍ରାପ୍ତି ପୂର୍ବରୁ ସେ କହିଥିଲେ- 'ପନ୍ଦର ଶହ ବର୍ଷ ପାଇଁ ମୁଁ ଅନେକ କିଛି କରିଯାଇଅଛି। ବାସ୍ତବରେ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କର ଧରାବତରଣ ହିଁ ଭାରତର ଗୌରବ ବୃଦ୍ଧି କରିଥିଲା। ଦୁର୍ବଳ ଶ୍ରେଣୀର ଲୋକଙ୍କ ପାଇଁ ସେ ସଦା ସର୍ବଦା ତତ୍ପର ଥିଲେ। ସବୁ ଧର୍ମ ପ୍ରତି ସମ୍ମାନବୋଧ ଓ ସେବାକୁ ସେ ସର୍ବପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଦେଇଥିଲେ। ସମଗ୍ର ମାନବ ଜାତିକୁ କର୍ମଯୋଗରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ କରିବାକୁ ଚେଷ୍ଟିତ ଥିଲେ। ମାନବବାଦୀ ସ୍ୱାମିଜୀଙ୍କ ବାଣୀ ପୃଥିବୀକୁ ଚିରକାଳ ପାଇଁ ପ୍ରେମ, ସ୍ନେହ, ଜ୍ଞାନ, ସଂହତି ଓ ସାଧୁତା ମାର୍ଗ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରୁଥିବ। ତେଣୁ ତାଙ୍କଭଳି ମହାପୁରୁଷଙ୍କର ଜୟନ୍ତୀ ପାଳନ କରି ତାଙ୍କରି ଆଦର୍ଶରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ହୋଇ ତାଙ୍କରି ଧର୍ମ ଧାରାରେ ଚାଲିଲେ ଆମେ ଓ ଆମ ଯୁବପିଢ଼ି ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ଉନ୍ନତି କରିବେ। ତେଣୁ ଯୁବ ସମାଜଙ୍କ ପାଇଁ ତାଙ୍କର ଉପଦେଶ ବିଶେଷ ଭାବରେ କାମ ଦେବ। ତେଣୁ ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ ଆମର ଚିର ପୂଜନୀୟ ଓ ଏହି ମହାନ୍ ପୁରୁଷଙ୍କୁ ପ୍ରଣିପାତ ଜଣାଉଛୁ।

ମମତା ରାଉତ
ଅନୁଗୁଳ

ରଙ୍ଗର ପରବ ହୋଲି

ଆସିଛି ହୋଲି
ସପ୍ତରଙ୍ଗର ହୋଲି
ବେରଙ୍ଗ ମନରେ ଭରିଦିଏ
ଖୁସି ହସର ପାଖୁଡ଼ା ମେଲି।
ଆସିଛି ହୋଲି।

ହୋଇଯାଏ ଏକ ରଙ୍ଗ
ସବୁ ରଙ୍ଗ ଦେଲେ ବୋଳି
ଜାତି, ବର୍ଣ୍ଣ, ଭେଦ,
ଭାବ ସବୁ ଭୁଲି ଆଜି ଖେଳିବା ହୋଲି।

ହୋଲି ପରି ଏକ ସୁନ୍ଦର ଦିନରେ
ପୁଲକିତ ହୁଏ ମନ
ଅବିର ସ୍ପର୍ଶରେ ହୋଇଯାଏ
ମନ ସାଙ୍ଗେ ମନର ମିଳନ।

ଫଗୁଣ ମାସର ମୃଦୁ ମୃଦୁ
ସୁଲଳିତ ପବନେ
ଆସେ ଦୋଳ ଯାତରା
ପୂଜା ହେବେ ରାଧାଗୋବିନ୍ଦ
ଆଜି ପରା ଦୋଳଯାତରା।

ରଙ୍ଗର ଆତୁଆଳରେ ଲୁଚିଯାଏ
ସବୁ ରାଗ, ରୋଷ, ଭେଦ, ଭାବ।

ଜାତି, ବର୍ଣ୍ଣ, ରଙ୍ଗ ନିର୍ବିଶେଷରେ
ଏମିତି ଏକ ହୋଲି ପରବ।

ହୋଲି ପରା ଦିନରେ
ଯେବେ ବିରାଜିବେ
ଦୋଳମଣ୍ଡପେ ଦିଅଁ
ରାଧାଗୋବିନ୍ଦ
ଛୁଟିବ ଖୁସିର ସୁଅ
ଜନେ ହେବେ ଆନନ୍ଦ।

ଖେଳିଯାଏ ମନରେ
ନୂଆ ଉନ୍ମାଦନା ଓ ଉଦ୍ଦୀପନା
ଯେବେ ଆସେ ହୋଲି
ଫଗୁଣର ଚଉପାଶେ ବୋଳିଦିଏ
ନାନା ରଙ୍ଗ ଭଳିକି ଭଳି।

ଇନ୍ଦ୍ରଧନୁର ସପ୍ତରଙ୍ଗ ଯେ ହୋଲିର ରଙ୍ଗରେ
ପୁଲକିତ ସର୍ବେ ହୋଇ ଉଠନ୍ତି,
ହୋଲିର ଆଗମନରେ।

ହୋଲିର ରଙ୍ଗରେ ରଙ୍ଗୀନ ହୁଏ
ଅପୂର୍ବ ଏ ଧରା।
ସତେ ଯେମିତି ଲାଗେ
ଧରିତ୍ରୀ ସପ୍ତ, ରଙ୍ଗରେ ଭରା।

ଶିଖା ନାୟକ
ଅନୁଗୁଳ

ଗଣତନ୍ତ୍ର ଦିବସ

ଗଣତନ୍ତ୍ରର ଏ ଭବ୍ୟ ମହୋତ୍ସବ
ଉତ୍ସବମୁଖର ଦେଶ,
ଫରଫର ଉଡେ ତ୍ରିରଙ୍ଗା ପତାକା
ଖେଳେ ଆନନ୍ଦ ଉଲ୍ଲାସ ।୧।

ହସୁଛି ତ୍ରିରଙ୍ଗା ହସୁଛି ମୋ ଦେଶ
ହସୁଛି ଭାରତମାତା,
ହସେ ହିମାଳୟ ସାଗର ତଟିନୀ
ଗିରିବନ ତରୁଲତା ।୨।

ମହକୁଛି ଆଜି ଏ ଦେଶର ମାଟି
ହସୁଛି ସୁନାର କ୍ଷେତ,
ଫୁଲେ ଫୁଲେ ଉଡ଼ି ଭଅଁର କରୁଛି
ସଭିଙ୍କ ଭବ୍ୟ ସ୍ୱାଗତ ।୩।

ମହାପୁରୁଷଙ୍କ ପ୍ରତିମୂର୍ତ୍ତି ଆଜି
ହୋଇ ଉଠିଛି ଜୀବନ୍ତ,
ଦେଶବାସୀଙ୍କର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ତାଙ୍କ
ଚରଣରେ ସମର୍ପିତ ।୪।

ବୀର ସୈନିକର ତ୍ୟାଗ ଦେଶଭକ୍ତି
ଦେଶ କରୁଛି ସ୍ମରଣ,
ଏ ଦେଶର ତୁମେ ଜାଗ୍ରତ ପ୍ରହରୀ
ଧନ୍ୟ ତୁମ ବଳିଦାନ ।୫।

ଶାନ୍ତି ଅହିଂସା ଜାତୀୟ ଏକତା
ଗଣତନ୍ତ୍ର ମୂଳମନ୍ତ୍ର,
ଏଇ ସେ ଭାରତ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱରେ
ସ୍ଥାନ ଯାହାର ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ।୬।

ବିଶ୍ୱର ବୃହତ୍ ଗଣତନ୍ତ୍ର ଆଜି
ଗର୍ବ କରେ ଅନୁଭବ,
ଦେଖି ଭାରତର ଭବ୍ୟ ଗଣପର୍ବ
ଅମୃତର ମହୋତ୍ସବ ।।

ପ୍ରତି ଭାରତୀୟ ହୃଦୟେ ଜାଗ୍ରତ
ହେଉ ଅମୃତ ଭାବନା,
ସବୁରି ଅନ୍ତରେ ଭରିଯାଉ ଭକ୍ତି
ଅମୃତ ଦିବ୍ୟ ଚେତନା ।।

ସ୍ମିତା ମିଶ୍ର
ଅନୁଗୁଳ

Tell me no more of thy love, papeeha,
Wouldst thou recall to my heart, papeeha,
Dreams of delight that are gone,
When swift to my side came the feet of my lover...

- A Love Song From The North by Sarojini Naidu

The lines itself depict why Mahatma Gandhi named her "The Nightingale of India". A child virtuso who managed to write a poem of 1300 lines... at a mere age of 12.... Sarojini Chattopadhyay an epitome of women empowerment was born in the year 1879, February 13 to Dr. Aghore Nath Chattopadhyay and Varada Sundari Devi in the city of Hyderabad. She completed her education from Madras University, then at King's College, London followed by Girton College in Cambridge.. In 1898 she came back to Hyderabad and married Govindarajulu Naidu, a physician.

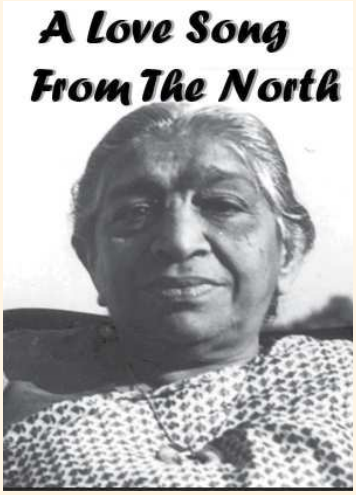

She was allured to the Indian Congress Movement specially towards the Non Cooperation Movements of Gandhi after she gained her fair share of experience in advocating women rights back in England. In the beginning of 1900s she was considered as a very popular orater mainly speaking out for women's independence and education. She was awarded the "Kaisar -i- Hind Medal" for her social movements in flood reliefs in 1911 which was returned by her in protest over the Jallianwala Bagh massacre. She was chosen as the first woman president and the second president of the Indian National Congress in 1925. She played a very important role in the Dandi March or Salt satyagraha alongside Mahatma Gandhi in April 1930. The Salt March continued under her lead after Gandhi's Detention. She was imprisoned for participating in the Second Round Table Conference and Quit India Movement.

While it comes to protecting women's rights, Naidu helped in establishment of the Women's Indian Association along with Muthulakhsmi Reddy in 1917.

Infact she accompanied her colleague Annie Besant, an English Feminist in advocating universal suffrage in front of the Joint Select Committee in London. She is also one of the founders of All Indian Women's Conference in 1927. Following India's independence she was chosen as the Governor of United province making her the first women governor in India.

Apart from her stalwart political career, she is widely known for her poetry that includes patriotism, romance, and tragedy. Her first collection of poems "The Golden Threshold" was published in 1905.

Her play, "Maher Muneer", written in Persian impressed the then Nawab of Hyderabad. The Bird of Time, The Broken Wing,The Song of the Palanquin Bearers, are some of her renowned works.

In 1918 , her speechs were collected and published for the first time in form of "The Speeches and Writings of Sarojini Naidu"

Sarojini Naidu is one of India's Feminist icons and in honour of her memory her birthday is celebrated as the Women's Day to acknowledge her voice for women's rights.

To honour her, Asteroid 5647 Sarojininaidu, discovered by Eleanor Helin at Palomar Observatory in 1990, was named after her. The University of London also enlisted her among the "150 Leading Women" category .

On the eve of her birthday we shall pray to honour her principles and look forward for a better India

Radha Basu
Bhubaneswar

Facts about the 'Nightingale of India'

- Sarojini Naidu joined the Indian Independence Movement in 1905. Sarojini Naidu also raised her voice against evil practices which affected the lives of women across the country.
- She played a major role in establishing Women's Indian Association (WIA) in 1917. Naidu went back to England in 1919 to advocate for freedom from the tyrannical British rule. She came back to India and joined Mahatma Gandhi's Satyagraha Movement.
- Sarojini Naidu, along with other freedom fighters played a major role in Civil Disobedience and Quit India Movement. She inspired women all across the country to step out of their houses and take part in the nation's quest to attain Independence.

ON THE 159TH BIRTH ANNIVERSARY, WE REMEMBER SOME INSPIRING THINGS ON

SWAMI VIVEKANANDA

Swami Vivekananda should always be remembered for his inspiration of the mankind. Vivekananda spread the word of humanity and brotherhood among men and women and called for global integrity through spiritual upliftment.

National youth day is celebrated on 12th January every year on the birth day of Swami Vivekananda. He was born on 12th January 1863 into a financially well off family. His father Vishwanath Dutta was an attorney and his mother Bhubaneswari Devi was a devout house wife.

Swami Vivekananda's pre-monastic name was Narendra Nath Dutta. As a child he was known as Billey and was very naughty. Bribes and threats did not work on him. Finally his mother would pour cold water on his head chanting the name of Shiva to quiten him. It was due to such tantrums that prompted the mother to say "I prayed to Shiva for a son and he sent me one of his demons."

Young Narendra was interested in spirituality and used to meditate in front of the images of Hindu deities. He was an avid reader in wide range of subjects including the Hindu scriptures. He was known for his prodigious memory and his ability in speed reading. In his twenties he was greatly influenced by Sri Ramakrishna and went on to become his disciple adopting the name of Swami Vivekananda. He established the Ramakrishna Mission and the Ramakrishna Math in 1897 in Kolkata with headquarters established in Belur Math. He left for his heavenly abode on 4th July 1920 at the young age of 39.

Kalyanidutta Mohanta
Angul

SWAMI VIVEKANANDA JAYANTI

How to describe the pinnacle of infinite? One of the eminent personalities of India, a great soul, a great human being, who was responsible for awakening 19th century India to new beginning.

Narendra Nath Dutta was born on 12th January 1863 in Calcutta. His father's name was Vishwanath Dutta and his mother's name was Bhubaneswari Devi. Narendranath acquired the name of Swami Vivekananda when he became a monk. Since his early childhood, his life was greatly influenced by his mother and she played a significant role in shaping his life. Swami Vivekananda was born into a family of reputed scholars. While his father was an attorney at the Calcutta high court, his grandfather was a Persian and Sanskrit scholar. Swami Vivekananda completed his graduation from the university of Calcutta, he then went on to pursue law and practised as an attorney in the Calcutta high court. He became a principle of Shri Ramakrishna Paramahansa. It was from his guru, he learnt that in order to visually manifest God, one must work towards serving humanity. He preached his life learnings among the masses and his teachings had a great impact on society. His teachings were mainly inspired by the Vedas and the Upanishads, which were believed to be a great source of his strength, energy and wisdom to Indian society. The Ramakrishna Mission, named after his guru was organized and established by Swami Vivekananda on 1st May 1897. The sole mission of it was to provide voluntary work to the poor and needy. He was the first Indian to ever have visited America. He briefly addressed the Parliament of World's Religions at Chicago in 1893.

When he addressed, 'My brothers and sisters of America', the hall was filled with the sound of the people's applause. Swami Vivekananda had taken Mahasamadhi on 4th July 1902 only at the age of 39 at Belur Math, Howrah. His entire life was devoted to public services, serving humanity and upliftment of society. His teachings inspired a lot of people and brought a spiritual awakening in the 19th century, and so, it was in the year 1985 that the government of India declared his birth anniversary as 'National Youth Day'. The objective was to motivate the youth to lead the nation to prosperity, following the path carved by Swami Vivekananda. He had immense faith in the power of youth. One of his sayings is,'What I want is muscles of iron and nerves of steel, inside which dwells a mind of the same materials that of which the thunderbolt is made.

Now it is one of our greatest responsibilities that we make our next generation and henceforth all subsequent generations aware of this great personality.

Manisha Nath
Bhubaneswar

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर '**नालको महिला समिति**' समाज सेवा में अग्रसर रहती है। इसी तरह अनुगुळ व दामनजोड़ी की नालको महिला समितियाँ भी आवास के समीपवर्ती इलाकों में सक्रीयता से समाज सेवा प्रदान करती हैं। इन सभी के सदप्रयास का उद्देश्य सभी समुदाय के प्रत्येक आयु वर्ग तक लाभ पहुँचाना है। यहाँ **नालको महिला समिति** के सदप्रयास की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

नालको महिला समिति, भुवनेश्वर

नालको निगम कार्यालय में 'महिला, स्वास्थ्य व कार्य उत्पादकता' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करती हुईं, एनएमएस की अध्यक्षा। नालको व भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा सम्मिलित रूप से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

सभी के साथ, हमारे हाथ – भुवनेश्वर के बाहरी इलाके के गौशाला में सहयोग

अध्यक्षा, नालको महिला समिति द्वारा सदस्याओं के साथ आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर दिनांक – 04.01.2022 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर के गॉयनोकोलॉजी, पीडियॉट्रिक एवं पीडियॉट्रिक सर्जरी विभाग के आंतरिक रोगियों को फल व मास्क का वितरण किया गया।

पुलवामा हमले में शहीद होने वाले वीर शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए व आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर कैपिटल अस्पताल, भुवनेश्वर के गॉयनोकोलॉजी, एवं पीडियॉट्रिक विभाग के आंतरिक रोगियों को फल, मास्क व सैनेटरी सामग्री का वितरण किया गया।

नालको महिला समिति की सदस्या श्रीमती शगुफ्ता जब्री के बिदाई समारोह में स्मृति चिह्न प्रदान करती हुई अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्र

हमारे नये सदस्य

कामिनी जोशी, सदस्या, कार्यवाहक समिति

सौम्या महान्ति, सदस्या

सस्मिता साबत, सदस्या

करबी कर, सदस्या

अनुगुळ

विक्रमपुर थाना, तालचेर दौरा एवं मास्क तथा सेनेटाइजर का वितरण। साथ ही, कानून व व्यवस्था को बरकरार रखने के लिए अभूतपूर्व योगदान हेतु सुश्री जे.प्रधान का भी सम्मान किया गया।

भारत रत्न, लता मंगेशकर जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 15th April 2022 - Editor-in-Chief

नालको NALCO

National Aluminium Company Limited

Born in ODISHA..
Grown in ODISHA..
Globally Represents ODISHA...

No. 1 Lowest Cost Producer of Alumina in World

No. 1 Lowest Cost Producer of Bauxite in World

2nd Highest Net Foreign Exchange Earning CPSE in the Country

NALCO

THE INDUSTRIAL KONARK OF ODISHA

Designed and printed by sanket